जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 18 नवंबर 2019

जामिया प्रोफेसर की पुस्तक द गेम ऑफ वोट्स, का केरल के गवर्नर ने अनावरण किया

केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के प्रोफेसर फरहत बसीर ख़ान की पुस्तक ' द गेम ऑफ वोटः विज़ुअल मीडिया पॉलिटिक्स एंड इलेक्शन इन द डिजिटल एरा ' का, नई दिल्ली में 16 नवंबर, 2019 को आयोजित एक समारोह में अनावरण किया। इस अनावरण समारोह में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नजमा अख्तर, प्रसार भारती के अध्यक्ष श्री ए सूर्य प्रकाश, बिजनेस वर्ल्ड और एक्सचेंज4मीडिया के अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक डॉ अनुराग बत्रा और जामिया के सेंटर फाॅर मीडिया एंड गवर्नेंस के निदेशक बिस्वजीत दास सहित अनके जाने माने लोग उपस्थित थे।

इस मौके पर श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कहा, "इस बेहद प्रासंगिक किताब के लिए लेखक को मेरी हार्दिक बधाई, वर्तमान समय में वास्तव में ऐसी पुस्तक की ज़रूरत है। द गेम आॅफ वोट, भारतीय राजनीति और चुनावों पर एक महत्वपूर्ण प्राइमर है, और हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने इस किताब के बारे में जो कहा है, मैं उससे शब्दशः सहमत हूं। मुझे लगता है कि इसे उन सभी लोगों को पढ़ना चाहिए जो भारतीय राजनीति और चुनावों में रूचि रखते हैं और मानते हैं कि मीडिया के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक एक स्वतंत्र मीडिया और जीवंत लोकतंत्र, दोनों के महत्व को रेखांकित करती है, क्योंकि यही एकमात्र प्रणाली है जो समान विकास ला सकती है। "

प्रो नजमा अख्तर ने टिप्पणी की, "प्रो खान की पुस्तक, द गेम ऑफ़ वोट्स, अत्यंत महत्वपूर्ण है और मैं उत्साहित हूं कि जामिया, वैज्ञानिक अनुसंधान में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ ही अंतःविषय अध्ययन के लिए भी सार्थक कार्य कर रहा है। पुस्तक अनुसंधान की सीमाओं का विस्तार करती है, वास्तविक ज्ञान का निर्माण करती है और सार्थक कार्यों की गुणवत्ता को बढ़ाती है। यह न केवल राजनेताओं के लिए, बल्कि चिकित्सकों, शिक्षाविदों और छात्रों के लिए भी उपयोगी होगी। "

लेखक फरहत बसीर खान ने कहा, "इस पुस्तक को लॉन्च करने के लिए आज का दिन सारगर्भित है क्योंकि प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की स्थापना 1966 में आज ही के दिन हुई थी। मैंने इस पुस्तक को इसलिए लिखा है क्योंकि आज चुनाव और लोकतंत्र दोनों केवल एक प्रतिनिधि ही नहीं हैं, वे वास्तव में

सहभागी बन गए हैं। । मैंने यह किताब इसलिए लिखी है क्योंकि अब चुनाव की रणनीति और राजनीतिक अभियान बहुत पेचीदा हो गए हैं, राजनीतिक दलों का स्वरूप कल्पना से परे विकसित हो रहा है। मैं इसे भारतीय जनता के लिए एक किताब कहूंगा क्योंकि यह इस बात का खुलासा करती है कि कैसे भारत में दो मुख्य राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीति बनाई, चुनाव लड़ा, नारों के पीछे उनकी सोच क्या थी, उनके अभियान का खर्च, सोशल मीडिया का इस्तेमाल , उनके नेताओं का करिश्मा और मतदाताओं की उनके प्रति प्रतिक्रिया कैसी रही।‘‘

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया संयोजक